International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 10-07-2021, Accepted: 27-07-2021, Published: 13-08-2021
Volume 7; Issue 4; 2021; Page No. 71-74

मथुरादत्त मठपाल द्वारा अनूदित साहित्य

कृष्ण चन्द्र[1], डॉ. गिरीश चन्द्र पन्त[2]

[1] शोधार्थी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर (नैनीताल), उत्तराखंड, भारत

[2] शोध मार्गदर्शक, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर, उत्तराखंड, भारत

सारांश

मथुरादत्त मठपाल कुमाउनी को साहित्य अकादमी भाषा सम्मान तक पहुँचाने वाले रचनाकार हैं। साहित्यिक समाज उन्हें कवि और 'दुदबोलि' पत्रिका के सम्पादक के रूप में जानता है। किन्तु उनके द्वारा रचा गया अनुदित साहित्य संख्यात्मक और गुणात्मक रूप से कम नहीं, अनुवाद कर्म साहित्यिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। उसकी विवेचना के बिना मठपाल के साहित्य का समग्र मूल्यांकन नहीं हो सकता है। उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, अवधी, कुमाउनी रचनाओं का कुमाउनी में, तथा कुमाउनी रचनाओं का हिन्दी भावानुवाद किया है। जिसमें उन्हें सफलता मिली है।

मूल शब्द: भावानुवाद, गद्यानुवाद, काव्यानुवाद, हिन्दीकरण, अर्थाभिव्यंजना, भावाभिव्यंजना, अन्तरभाषिक अनुवाद, साहित्यिक अनुवाद।

प्रस्तावना

मथुरादत्त मठपाल अनुवादक पहले हैं साहित्यकार बाद में। अनुवाद एक कला है। कला और कलाकार का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है। अनुवाद के लिए स्रोत भाषा, शब्दार्थ, भाव, एवं लक्ष्य भाषा का ज्ञान आवश्यक है। उनके द्वारा संस्कृत, हिन्दी, अवधी से कुमाउनी में या कुमाउनी से हिन्दी में अनुवाद किया गया है। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, अवधी भाषाओं पर विशेषज्ञता होने के कारण उनके द्वारा किया गया अनुवाद सार्थक एवं प्रमाणिक है।

मठपाल के साहित्य कर्म का पुस्तकीय प्रकाशन अनुवाद से आरम्भ हुआ। पहली पुस्तक वर्ष 1986 में 'अनपढ़ी'[1] नाम से प्रकाशित हुई। जिसमें कुमाउनी कवि शेर सिंह बिष्ट 'अनपढ़' की 12 कविताओं का हिन्दी अनुवाद किया गया। मठपाल अनुवाद के लिए 'अन्वार' शब्द का प्रयोग करते आए हैं। 'अन्वार' शब्द उन्हें उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध रेखा चित्रकार बी0 मोहन नेगी द्वारा सुझाया गया। 'अनपढ़ी' में शेरदा 'अनपढ़' की 12 श्रेष्ठ कविताओं का अनुवाद है। अनुवादक का पूर्ण प्रयास रहा है कि- 'शेरदा के गीतों का मूल भाव अनुदित होकर भी बना रहे'। मठपाल के अनुसार- "प्रस्तुत संकलन में जो कुछ भी सत्य शिव एवं सुन्दर है वह शेरदा की इसी विराट-असीम भारतीय चेतना का दात्वय भी है और जो कुछ दोष त्रुटियाँ हैं वह मेरी व्यक्तिगत-मानुषगत सीमायें हैं।"[2]

मठपाल द्वारा दूसरी अनुदित रचना 1987 ई0 में प्रकाशित 'गोमती गगास'[3] है। जिसमें गोपालदत्त भट्ट की 16 कुमाउनी कविताओं का हिन्दी भावानुवाद किया गया है।

अनुवादक को आँग्ल कवि शैली और गोपालदत्त भट्ट के व्यक्तित्व के दो अनमेल तत्व "अति सूक्ष्म ग्राही भावुकता और एक अनाबद्ध विद्रोह परता"[4] आकर्षित करते हैं। भट्ट कुमाउनी के क्लासिक कवि हैं। जिनकी कविता का भावाकाश देशकाल की सीमाओं से परे है। कुमाउनी से हिन्दी में अनुदित होकर उनकी कविताऐं हिन्दी भाषी/पाठियों के लिए सहज प्राप्य हो गई हैं। संकलन में प्रकृति, देशप्रेम तथा समाज, सत्ता एवं समय को हुँकारती कविताऐं हैं। रचनाओं की संख्या सीमित होने के बावजूद इनकी गुणवत्ता/अर्थ गहनता असीमित है। भट्ट की कविताओं का अनुवाद करने से पूर्व अनुवादक उनकी विषय वस्तु, भूमिका के माध्यम से स्पष्ट कर देता है। यथा- "गोपालदत्त भट्ट मूलत: और प्रथमत: प्रकृति और सौन्दर्य के कवि हैं। प्रेम एवं माधुर्य के गायक हैं।"[5]

'हम पीर लुकाते रहे'[6] कुमाउनी के श्रेष्ठ गीतकार और लोक गायक हीरा सिंह राणा की 17 कुमाउनी कविता/गीतों का हिन्दी गद्यानुवाद मठपाल द्वारा किया गया। इस लघु अनुवाद पुस्तिका का प्रकाशन सन् 1989 में हुआ। अनुवादक ने इस पुस्तिका में राणा के काव्य संसार से चुनिंदा 17 फूल चुनकर उनका अर्थ विस्तार करने का कार्य किया है।

मूल कविता

"धरती की पीड़ कैं, बल्दा- चरनैं हिटा रे।
जू पारी जुग-भार कनम्, धरनैं हिटा रे,
धरती कि स्यौंनि कै फूलोंल भरनैं हिटा रे।।"[7]

गद्यानुवाद: "धरती की पीड़ा को रे बैल! चरते हुए चल। तेरे जुए पर जुग का भार है। इसे अपने कन्धों पर धरता चल। धरती की माँग को फूलों से भरता हुआ चल रे। जुताई आरम्भ करने की दिन तुझे रोली-अक्षत लगाऊँगा। तेरे पावों तले एक दिन स्वर्ग लाऊँगा। तेरी एक-एक ठोकर को मैं सौ-सौ जन्म दूंगा। तू आगे-आगे चल मैं तेरे पीछे-पीछे हूँ जुग को जीतेंगे रे। धरती की बाँझ कोख को आबाद करता चल। तेरे जुए पर जग का भार है। इसे अपने कन्धों पर धरता चल रे।"

मठपाल की चर्चित अनुदित कृति 'था मेरा घर यहीं कहीं'[8] है, यह चन्द्र कुँवर बर्तवाल की अस्सी हिन्दी कविताओं का कुमाउनी रूपांतरण है। संकलन का शीर्षक कविता 'मेरा घर' से लिया गया है। छायावाद के प्रमुख आधार स्तम्भ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' से बर्तवाल की लखनऊ प्रवास के दौरान बनी मित्रता आजीवन रही। घर वापसी (पहाड़ आने) के बाद

हिमवंत के कवि द्वारा निराला जी को भेजी गई कविता 'मृत्युंजय' का कुमाउनी अनुवाद दृष्टव्य है-

मूल कविता

"सहो अमर कवि सहो, अत्याचार सहो जीवन के, सहो धरा के कंटक,
निष्ठुर वज्र गगन के।
कुपित हैं देवता तुम पर, हे कवि! गा-गा कर, क्योंकि अमर करते तुम,
सुख-दुख मर्त्य भुवन के॥"[9]

कुमाउनी अनुवाद

"सै लियो अमर कवि, जुलम सै लियो जिनगी'क, सै लियो दुणिया'क
कानऽ, कठोर बज्जर गगन'क। नराज छन दयाप्त छन तुमुन परि, हे कवि!
गै-गै बेर, किलैकि अमर करछा तुम, दुख-सुख मर्त्य भुवन'क॥"

'गीत माधवी' बर्त्वाल की शृंगारिक विरोधाभास की कविता है। जिसमें नायक का हृदय आशा और निराशा के बीच झूलता रहता है। इसका अनुवाद सराहनीय है-

मूल हिन्दी कविता

"अब छाया में गुंजन होगा, वन में फूल खिलेंगे।
दिशा-दिशा से अब सौरभ के, धूमिल मेघ उठेंगे॥[10]

कुमाउनी अनुवाद

"अब स्योल में गुनगुन होली, बणपन फूल खिलैंला।
दिश दिश बै अब गन्ध सुबास'क, बादो धूमैंल उठैंला॥"

मठपाल की तीन अप्रकाशित अनुदित कृतियाँ 'साधना जात्रा'- बाबा श्री कल्याण दास की आत्मकथा का कुमाउनी रूपान्तरण, श्रीमद्भागवत गीता के सात अध्यायों का कुमाउनी अनुवाद, रामचरितमानस का कुमाउनी अनुवाद है। मठपाल कुमाउनी कविताओं का हिन्दी अनुवाद कर उन्हें हिन्दी पाठकों के लिए सहज बनाते हैं। वे कविता को गद्य/कविता में ही अनुदित करते हैं। जिसके लिए सटीक भाषा के साथ शब्द, पद्य, छन्द, अलंकार, तुक, भाव का चयन करते हैं। समस्या यह है कि बोलियों का सौन्दर्य उनके बोलने की विशिष्ट शैली से निखरता है। बोली के परिनिष्ठित रूप का हिन्दीकरण/अनुवाद करना असंभव नहीं तो कठिन जरूर है। उनके द्वारा अनुदित कविता का एक उदाहरण दृष्टव्य है।

मूल कविता

"छल छल छलका छिड़ा-छवाया, मुलमुल हँसनी गध्यरा- रौली,
गैणोंल पातव नचै दियनी- घुघुता-कफुवा-तितुरा-न्यौली॥"[11]

अनुदित कविता

"छल छल छलकें निर्झर स्रोत, मन्द मन्द हंसते नदियाँ-नाली,
गानों से वन प्रान्त नचा देते, घुघुती-कप्फू-तीतर-न्यौली ॥"

अनुदित कविता में 'छिड़ा-छवाया' के लिए 'निर्झर स्रोत' 'गध्यरा-रौली' के लिए 'नदियाँ-नाली' 'पातव' के लिए 'प्रान्त' शब्दों का प्रयोग कर मठपाल अपनी मौलिक कल्पना शक्ति का परिचय देते हैं। निश्चय ही काव्यानुवाद, गद्यानुवाद से अधिक परिश्रमकर है। कवि हृदय मठपाल जितना कुमाउनी काव्य साधना से परिचित हैं। उतना ही हिन्दी कविता के उपादानों भी। उनका अनुवाद अनुकरण न होकर सृजन है। जिसमें अनुवादक की मौलिकता स्पष्ट झलकती है। अनुदित रचना की प्रभावोत्पादकता बढ़ाने के लिए अनुवादक कुमाउनी शब्दों का हिन्दीकरण करता है। लोक बोली के शब्दों का सटीक प्रतिस्थानी भाषाओं में मिलना असम्भव नहीं भी तो श्रमसाध्य अवश्य है। निम्नलिखित उदाहरण अनुवादक की हिन्दी कविता में कुमाउनी शब्द ग्राह्यता का परिचायक है-

मूल कविता

"बाधवों जोभन कैं, धर्ति च्यापणि चांण फैगे।/ आगासा समन्दरों में, पद्मावति नाण फैगे।
शुरु-शुरु पौ बजाने, भितेर क्वे औण फैगो।/ रंगीलो सौण ऐगो॥"[12]

हिन्दी अनुवाद

"बादलों के यौवन को, धरती छोरी जोहने लगी।/ आकास के समुन्दरों मैं पद्मावती नहाने लगी।/
हरियाले संसार में नजर फिसलने लगी।/ जाने कैसी दहन एक देह में सरने लगी।/
मन्द-मन्द पग बजाता, भीतर कोई आने लगा।/ रंगीला सावन आ गया है॥"

मठपाल की अनुदित कृतियों की स्रोत भाषा
1. कुमाउनी
2. हिन्दी
3. संस्कृत
4. अवधी,

मठपाल अनुवाद में समीपता लाने के लिए कई बार स्रोत भाषा के शब्दों को यथावत् लक्ष्य भाषा में ग्रहण कर लेते हैं। जिससे अनुवाद की प्रभावशीलता में कमी नहीं आती और उसकी सुन्दरता भी बनी रहती है-

मूल कविता

"क्वेत गंगाक् ढीक तिसैन रैगो/ कैकि न्है गए उमर बास में सांस की
उर्मिला देइ मां ठाड़ि चै रै/ आज उमर पुरीणीं बणवास की ॥"[13]

हिन्दी अनुवाद

"कोई तो गंगा के ढीक तिसाता रहा,/ किसी की बीती उमर गंध में सांस की।
उर्मिला देहरी में ठाड़ी बाट जोहती,/ आज अवधि पूरी रही बनवास की॥"

उपरोक्त पंक्तियों में अनुवादक द्वारा 'ढीक', 'ठाड़ी' और 'बाट' शब्द को यथावत मूल कविता से ग्रहण किया गया है। अनुवादक के तौर पर मठपाल को स्रोत भाषा का अच्छा ज्ञान है। कुमाउनी उनकी मातृभाषा है इसलिए कुमाउनी की व्याकरणिक संरचना से परिचित होना उनके लिए सहज है। वे कुमाउनी की अर्थाभिव्यंजना एवं भावाभिव्यंजना से पूर्ण परिचित हैं। उनके द्वारा अनुदित कविता में ध्वन्यात्मकता यथावत् रहती है-

मूल कविता'

"हरिया-भरिया सारिमा छोरिया, परियां जास छम-छम नांचण रीं।
कौंणि की सुन्याली - सुघड़ी बालड़ी, पौनै भुकिल शरमाण - कामणरीं।"[14]

हिन्दी अनुवाद

"हरे भरे खेतों में छोरियां-परियां जैसी छम- छम नाच रहीं।
कौंणि की सुनहरी- सुघड़ बालियां,पवन के चुम्बन से शरमा कांप रही।"

अनुदित रचनाओं का विश्लेषण करने पर उनकी अनुवाद पर समझ स्पष्ट होती है। यह अन्तरभाषिक अनुवाद की श्रेणी में आता है। जिसमें वे एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते हैं। उनके अनुवाद कार्य को साहित्यिक अनुवाद भी कहा जा सकता है। वे कुमाउनी के बिम्ब, प्रतीक, उपमानों को यथासम्भव हिन्दी में ढालने का प्रयास करते हैं-

मूल कविता

"शराबजौ ढोई जांछ, कफुआ बुलांण में, उमेदा उमाव उठा, नङरा निसांण में।
दिश-दिशि बोट-डाव, फूलि फूलि झूलि गेई,/ कां पड़ि नजर त्येरि-छाज बटि चांण में। जुन्यालि पसरि गेछौ, गोमती-गगास में।"[15]

हिन्दी अनुवाद

"शराब सी बिखर जाती, कफुवा के बोलने में, उम्मीदों के उबाल उठते, नगाड़े- निशान में।
दिश-दिश तरु विटप, फूल फूल झूल गये।/ कहां पड़ी नजर तेरी - छज्जे से निहारने में।/
जुन्हाई पसर गई, गोमती गगास में।"

मठपाल की अनुदित कृतियों की लक्ष्य भाषा

1. कुमाउनी
2. हिन्दी

मठपाल द्वारा अनुदित कविता और मूल कविता को परस्पर सामने रख देने पर दोनों के भाव शिल्प और सौन्दर्य में अन्तर करना कठिन हो जाता है। बदलती है तो सिर्फ भाषा। अनुवाद में मूल कविता का लगभग 75% भाग ही अनुदित होकर हम तक पहुँचता है। बाकी 25% भाग कहीं छूट जाता है, या अनुवादक की सर्जनशीलता से आच्छादित हो जाता है। मठपाल अनुवादक के तौर पर अपनी जिम्मेदारी का ईमानदारी से निर्वहन करते हैं। जिससे उनके अनुवाद में यथार्थता आती है।

यथा

मूल कविता

"पूर्व बटि निकइ गो लाल मुखी सूर्ज; किरणोंक् हातोंल खितणौंछ अङाव-
बादवकि छबिलि छवरि कें, भुकि ल्हि-ल्हि बेर ब्योंजोंणौंछ-
शरमल लाल है गेइन उवीक् गलाड़।।"[16]

हिन्दी अनुवाद

"पूर्व से निकल गया लाल मुखी सूर्य; किरनों के हाथों से डाल रहा अंकवार
आकास की सेज पर सोई ,बादल की छबीली छोरी को चुम्बन ले-ले कर जगा रहा-शर्म से लाल हो गए उसके गाल।।"

'अनपढ़ी' की स्रोत भाषा कुमाउनी है और लक्ष्य भाषा हिन्दी। संकलन की भूमिका में रचना का उद्देश्य अनुवादक द्वारा स्पष्ट किया गया है- "अनपढ़ी पाठकों को कुमाउनी भाषा की, कुमाउनी कवि तथा कविता की, एवं स्वयं कुमाऊनी क्षेत्र की एक संक्षिप्त झांकी प्रस्तुत करने में समर्थ रहेगा।"[17]
अनुवाद कला का विश्लेषण अनुवादक की मात्र एक कृति की विवेचना से नहीं हो सकता। इसके लिए उसकी अन्य अनुदित कृतियों की भी विवेचना करनी होगी। जिससे पता चल सके कि विभिन्न रचनाकारों की रचनाओं के साथ अनुवादक किस सीमा तक तादात्म्य में स्थापित कर पाया है। किस कवि या रचना के अनुवाद में अनुवादक को अधिक सफलता मिली है। शेरदा की कविता की भावभूमि भट्ट की कविता से अलग है। दोनों का व्यक्तित्व भिन्न हैं। किन्तु दोनों की कविताओं का अनुवादक एक है। जिसके द्वारा शेरदा की कविता का अनुवाद भी उसी तल्लीनता से किया गया है जिस तल्लीनता से गोपाल दत्त भट्ट जी की कविताओं का अनुवाद किया गया है-

मूल कविता

"अंधकार-रातक् डरैल, तार उडियार फै रई। मनख्यौक सौद हेरौ, रिसि काव चै रई।
ककैं मांगी मोल मिलूं, करमैलै जाणि राखी। द्वी गज कफनाक लिजी, सबूंल हाथ तांणि रखीं।।"

हिन्दी अनुवाद

"अंधकार- रात की डर से, तारे गुफा बैठ रहे। मानुष का सौदा हो रहा, गीध कौवे देख रहे।
किसको मांगा मोल मिलता, कर्म ने यह जान रखा। दो गज कफन के लिए, सभी ने हाथ तान रखे।।"

कुमाउनी का संस्कार हिन्दी से जुड़ा होने के बावजूद भिन्न है। यह भिन्नता कुमाउनी की पहचान है। बोली को भाषा में अनुदित होने पर सहज/सरल बशर्ते माना जाए किन्तु बोली कि वाचिकता खो जाती है। किन्तु वे मूल कविता का भाव/अर्थ बनाए रखने में प्रयासरत हैं-

मूल कविता

"उठनै डोलि-डोलि खऊ पटाङण बटि, छाजनैई ब्यौल- ब्योलि/ डांडि और झांझि में / क्वे लाल मुकुटों में,/ क्वे लाल लुकुड़ों में॥"

अनुदित कविता

"उठ रही है डोली, आंगन प्रांगण से, सज रहे हैं वर-वधू/ डांडी में और अर्थी में/
कोई लाल मुकुटों में/ कोई लाल कपड़ों में॥"

अनुवादक के लिए कुमाउनी एक बोली मात्र ना होकर संस्कार है। जो उसे अपनी माटी की गन्ध से जोड़े रखती है। प्रत्येक व्यक्ति का घनिष्ठ परिचय मातृबोली से होता है। अनुवादक के तौर पर मठपाल और कुमाउनी के सम्बन्ध की विवेचना करने पर हम पाते हैं कि वे कुमाउनी की शास्त्रीय परम्परा का कवि है। उन्हें ठेठ कुमाउनी शब्दों का अनुवाद करने में कठिनाई नहीं होती।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मथुरादत्त मठपाल को संस्कृत, हिन्दी, अवधी, कुमाउनी से कुमाउनी अनुवाद करने में और कुमाउनी से हिन्दी अनुवाद करने में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। उनका यह प्रयास परवर्ती पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत तो है ही मील का पत्थर भी है।

सन्दर्भ

1. सं. मथुरादत्त मठपाल, 'अनपढ़ी' मुद्रक संगम प्रेस भिक्यासैंण, प्रथम संस्करण वर्ष-1986,
2. सं. मथुरादत्त मठपाल, 'अनपढ़ी' मुद्रक संगम प्रेस भिक्यासैंण, प्रथम संस्करण वर्ष-1986, पृष्ठ संख्या-03,
3. सम्पादक मथुरादत्त मठपाल, 'गोमती गगास', शर्मा प्रिंटिंग प्रेस, रामनगर नैनीताल, प्रथम संस्करण 1987 ई0।
4. सम्पादक मथुरादत्त मठपाल, 'गोमती गगास', शर्मा प्रिंटिंग प्रेस, रामनगर नैनीताल, प्रथम संस्करण 1987 ई0 पृष्ठ संख्या-03,
5. सम्पादक मथुरादत्त मठपाल, 'गोमती गगास', शर्मा प्रिंटिंग प्रेस, रामनगर नैनीताल, प्रथम संस्करण 1987 ई0 पृष्ठ संख्या-03,
6. सम्पादक मथुरादत्त मठपाल 'हम पीर लुकाते रहे' संगम प्रेस, भिक्यासैंण, जनपद अल्मोड़ा, प्रथम संस्करण 1989ई0,
7. सम्पादक मथुरादत्त मठपाल 'हम पीर लुकाते रहे' संगम प्रेस, भिक्यासैंण, जनपद अल्मोड़ा, प्रथम संस्करण 1989ई0, पृष्ठ संख्या-04,07
8. चन्द्र कुँवर बर्तवाल, 'था मेरा घर भी यहीं कहीं' सम्पादक मथुरादत्त मठपाल, रामगंगा प्रकाशन, पैंठपड़ाव, रामनगर (नैनीताल) पृष्ठ संख्या-07,
9. सम्पादक मथुरादत्त मठपाल, 'नदी चली जाएगी', रामगंगा प्रकाशन, पम्पापुर रामनगर (नैनीताल) वर्ष 2019, पृष्ठ संख्या-64,
10. चन्द्र कुँवर बर्तवाल, 'था मेरा घर भी यहीं कहीं' सम्पादक मथुरादत्त मठपाल, रामगंगा प्रकाशन, पैंठपड़ाव, रामनगर (नैनीताल) पृष्ठ संख्या-56,
11. मथुरादत्त मठपाल, 'गोमती गगास' शर्मा प्रिंटिंग प्रेस, रामनगर नैनीताल, प्रथम संस्करण वर्ष 1987, पृष्ठ संख्या-04, 05, 06, 07, 10, 15, 17,
12. सं. मथुरादत्त मठपाल, 'अनपढ़ी' मुद्रक संगम प्रेस भिक्यासैंण, प्रथम संस्करण वर्ष-1986, पृष्ठ संख्या-38,
13. सम्पा. मथुरादत्त मठपाल 'हम पीर लुकाते रहे' संगम प्रेस, भिक्यासैंण, जनपद अल्मोड़ा, प्रथम संस्करण 1989ई0, पृष्ठ संख्या- 11,12,
14. सम्पा. मथुरादत्त मठपाल, 'नदी चली जाएगी' रामगंगा प्रकाशन, पम्पापुर, रामनगर, नैनीताल, वर्ष 2019, पृष्ठ संख्या-13,66,
15. सं. मथुरादत्त मठपाल, 'अनपढ़ी' मुद्रक संगम प्रेस भिक्यासैंण, प्रथम संस्करण वर्ष-1986, पृष्ठ संख्या-13,
16. सम्पादक-मथुरादत्त मठपाल 'हम पीर लुकाते रहे' संगम प्रेस, भिक्यासैंण, जनपद अल्मोड़ा, प्रथम संस्करण 1989ई0, पृष्ठ संख्या – 07,
17. मथुरादत्त मठपाल 'गोमती गगास' शर्मा प्रिंटिंग प्रेस, रामनगर नैनीताल, प्रथम संस्करण वर्ष 1987, पृष्ठ संख्या- 27,
18. अनु. थुरादत्त मठपाल, 'था मेरा घर भी यहीं कहीं', रामगंगा प्रकाशन, पम्पापुर, रामनगर नैनीताल, प्रथम संस्करण, वर्ष-2013, संख्या-19,
19. अनु. मथुरादत्त मठपाल, 'रामचरितमानस का कुमाउनी अनुवाद', अप्रकाशित कृति
20. अनु. मथुरादत्त मठपाल, श्रीमद्भागवत गीता के सात अध्यायों का कुमाउनी अनुवाद, अप्रकाशित कृति
21. अनु. मथुरादत्त मठपाल, बाबा श्री कल्याण दास की आत्मकथा का कुमाउनी रूपान्तरण, अप्रकाशित कृति